Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ISSN 2454-3705

श्रुतसागर | શ્રુતસાગર
SHRUTSAGAR (MONTHLY)

March-2021, Volume : 07, Issue : 10, Annual Subscription Rs. 150/- Price Per copy Rs. 15/-

EDITOR : Hiren Kishorbhai Doshi

BOOK-POST / PRINTED MATTER

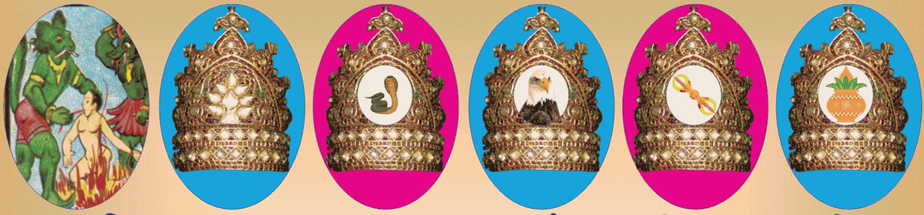

१. नारकी २. असुरकुमार ३. नागकुमार ४. सुवर्णकुमार ५. विद्युत्कुमार ६. अग्निकुमार

७. द्वीपकुमार ८. उदधिकुमार ९. दिक्कुमार १०. वायुकुमार ११. स्तनितकुमार १२. पृथ्वी

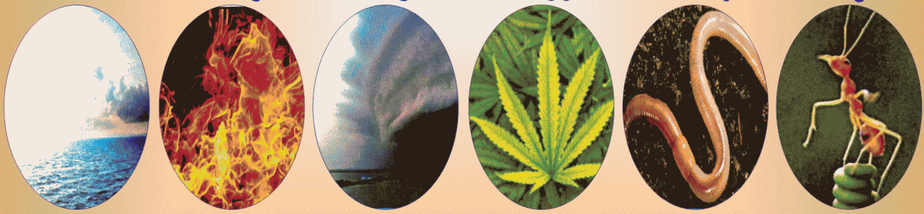

१३. जल १४. अग्नि १५. वायु १६. वनस्पति १७. बेइन्द्रिय १८. तेइन्द्रिय

१९. चउरेन्द्रिय २०. तिर्यंचपंचे. २१. मनुष्य २२. व्यंतर २३. ज्योतिष्क २४. वैमानिक

२४ दंडक प्रतिक चित्र

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर

For Private and Personal Use Only

प्राचीन लेखन सामग्री सचित्र परिचय (चित्र श्रेणी - २)

पाटिया - श्रुतलेखन के लिए खास मुद्रा में बैठकर लेखन करते समय कागज के नीचे आधार देने के लिए इसका उपयोग किया जाता था ।

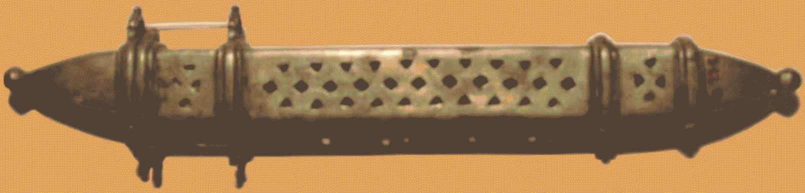

डिब्बी - कलम कित्ता आदि सुरक्षित रखने हेतु ।

मंजूषा - कागज की लुगदी से बनी हुई मंजूषा में लेखनी, स्याही, दावात आदि लेखन से सम्बन्धित सामग्री रखी जाती थी ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

RNI : GUJMUL/2014/66126 ISSN 2454-3705

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर का मुखपत्र

श्रुतसागर શ્રુતસાગર

SHRUTSAGAR (Monthly)

वर्ष-७, अंक-१०, कुल अंक-८२, मार्च-२०२१

Year-7, Issue-10, Total Issue-82, March-2021

वार्षिक सदस्यता शुल्क - रु. १५०/- ❖ Yearly Subscription - Rs.150/-

अंक शुल्क - रु. १५/- ❖ Price per copy Rs. 15/-

आशीर्वाद

राष्ट्रसंत प. पू. आचार्य श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी म. सा.

❖ संपादक ❖ हिरेन किशोरभाई दोशी

❖ सह संपादक ❖ रामप्रकाश झा, राहुल आर. त्रिवेदी

❖ संपादन निर्देशक ❖ गजेन्द्रभाई शाह

एवं

ज्ञानमंदिर परिवार

१५ मार्च, २०२१, वि. सं. २०७७, फाल्गुन शुक्ल द्वितीया

प्रकाशक

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर

(जैन व प्राच्यविद्या शोध-संस्थान एवं ग्रन्थालय)

श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा, गांधीनगर-३८२४२६

फोन नं. (079) 23276204, 205, 252 फैक्स : (079) 23276249, वॉट्स-एप 7575001081

Website : www.kobatirth.org **Email :** gyanmandir@kobatirth.org

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अनुक्रम

१.	संपादकीय	रामप्रकाश झा	५
२.	श्रुतप्रेमी दाताओं की सूची	-	६
३.	गुरुवाणी	आचार्य श्री बुद्धिसागरसूरिजी	७
४.	Awakening	Acharya Padmasagarsuri	८
५.	अप्रगट ५ गुरु भास संग्रह	गणि सुयशचंद्र-सुजसचंद्रविजयजी	९
६.	२४ दंडक विचारगर्भित महावीर विनती स्तवन	उपेन्द्र डी. भट्ट	१५
७.	धर्मकथानुयोगनी महत्ता अने श्री देवभद्रसूरिकृत कथारत्नकोष	मुनिश्री पुण्यविजयजी	२८
८.	पुस्तक समीक्षा	डॉ. हेमन्त कुमार	३०
९.	समाचार सार		३२

सजन फलजो फूलजो, वड जिम विस्तरजो ।
मासें वरसें जो मिलो, तो ईण रंगे रहेंजो ॥

प्रत क्र. ७५४१

भावार्थ- सज्जनपुरुष हमेशा फले फूले, उनका वटवृक्ष की तरह विस्तार हो, मास, वर्ष पर जब भी मिलें तो वे उसी रंग में रहें।

❖ प्राप्तिस्थान ❖

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर
तीन बंगला, टोलकनगर, होटल हेरीटेज़ की गली में
डॉ. प्रणव नाणावटी क्लीनिक के पास, पालडी
अहमदाबाद - ३८०००७, फोन नं. (०७९) २६५८२३५५

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संपादकीय

रामप्रकाश झा

श्रुतसागर का यह अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए हमें अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है। इस अंक में योगनिष्ठ आचार्य श्रीमद् बुद्धिसागरसूरीश्वरजी के द्वारा लिखित एक आध्यात्मिक पत्र व अन्य स्थायी स्तम्भों के अतिरिक्त छः अप्रकाशित कृतियों का प्रकाशन किया जा रहा है।

सर्वप्रथम **"गुरुवाणी"** शीर्षक के अन्तर्गत सिद्धगिरि यात्रा का आध्यात्मिक संदेश देनेवाला श्रीमद् बुद्धिसागरसूरीश्वरजी का पत्र प्रकाशित किया गया है। द्वितीय लेख राष्ट्रसंत आचार्य श्रीपद्मसागरसूरीश्वरजी के प्रवचनों की पुस्तक 'Awakening' से क्रमशः संकलित किया गया है, जिसमें पूज्य राष्ट्रसन्तश्री के आत्महितकारी उपदेशों को प्रकाशित किया गया है।

अप्रकाशित कृति प्रकाशन के क्रम में सर्वप्रथम पूज्य गणिवर्य श्रीसुयशचन्द्र-सुजशचन्द्रविजयजी म. सा. के द्वारा सम्पादित पाँच अप्रकाशित **"विजयराजसूरि भास"** का प्रकाशन किया जा रहा है। इन कृतियों में ऐतिहासिक सामग्री के रूप में पू. विजयराजसूरिजी के माता, पिता, जन्म, नगर, वंश, गुरु तथा गच्छादि का संक्षिप्त वर्णन करते हुए पूज्यश्री का शरीरसौष्ठव, पुण्यप्रतिभा, चारित्रादि सद्गुण तथा उनके प्रभाव से सम्बन्धित बातें सुन्दर शैली में प्रस्तुत की गई हैं। छठी कृति के रूप में ज्ञानमन्दिर के पंडित श्री उपेन्द्र डी. भट्ट के द्वारा सम्पादित **"२४ दंडक विचारगर्भित श्री महावीरजिन स्तवन"** प्रकाशित किया जा रहा है। इस कृति के अन्तर्गत २४ दंडक तथा २४ द्वारों का वर्णन करते हुए प्रभु महावीरस्वामी की स्तवना की गई है।

पुनःप्रकाशन श्रेणी के अन्तर्गत इस अंक में पुण्यविजयजी के द्वारा लिखित लेख **"कथारत्नकोश अने तेना कर्त्ता श्री देवभद्रसूरि"** का क्रमशः आगे का अंश प्रकाशित किया जा रहा है, जिसके अन्तर्गत संवेगरंगशाला आदि ग्रन्थों की प्रशस्ति के आधार पर देवभद्रसूरिजी के जीवन से सम्बन्धित शोधपरक मुद्दों का वर्णन किया गया है।

पुस्तक समीक्षा के अन्तर्गत श्री विजयजिनेन्द्रसूरिजी द्वारा सम्पादित **"संख्यावाचक शब्दकोष"** पुस्तक की समीक्षा प्रस्तुत की गई है, जिसके अन्तर्गत ग्रन्थों में रचनावर्ष प्रतिलेखन वर्ष आदि के रूप में उल्लिखित संख्यावाचक शब्दों के अर्थ प्रस्तुत किए गए हैं।

हम आशा करते हैं कि इस अंक में संकलित सामग्रियों के द्वारा हमारे वाचक अवश्य लाभान्वित होंगे व अपने महत्त्वपूर्ण सुझावों से हमें अवगत कराने की कृपा करेंगे। जिससे आगामी अंक को और भी परिष्कृत किया जा सके।

❊ ♦ ❊

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रुतप्रेमी दाताओं की अनुमोदना

श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा

सकल जैनसंघ का गौरवस्थान

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर

सदुपदेशक : प्राचीन श्रुत-तीर्थोद्धारक, राष्ट्रसंत

पूज्य आचार्यदेव श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराजा

श्रुतप्रेमी दाताओं की नामावली

- श्री विजय अणसुर जुदो गच्छ, साणंद
- श्री सुरेशभाई मफतलाल शाह, महेसाणा
- श्रीमती विमलाबेन धनराजजी भंडारी, मुंबई
- श्री कल्पेशभाई डी. भंडारी, मुंबई
- श्री गोडीजी महाराज जैन टेम्पल एन्ड चेरीटीज, मुंबई
- सुमतिनाथ श्वे. मू. पू. जैन संघ, मेमनगर, अहमदाबाद
- श्रीमती प्रेमिलाबेन जयंतिलाल शाह परिवार, नारणपुरा, अहमदाबाद
- श्री आदिनाथ श्वे. मू. पू. जैन संघ, नारणपुरा, अहमदाबाद
- श्री ऋषभदेव श्वे. मू. पू. जैन संघ, नारणपुरा, अहमदाबाद

धन्यवाद... अनुमोदना... अभिनंदन...

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गुरुवाणी

सिद्धिगिरि यात्रानो आध्यात्मिक संदेश आपतो एक पत्र

योगनिष्ठ आचार्य श्री बुद्धिसागरसूरि म.सा.

वसोथी ले० वि० अहिंथी तमारा उपर पत्र लख्यो छे। ते वांचीने समभावे संसारस्वरूप नित्य विचारतां, अनेक पापोने संभारी पश्चात्ताप करतां, गिरिराजना स्पर्शनयोगे आत्मगुणस्पर्शन अत्यंत सुख आपशे। जीवे अनादिकाळ मिथ्यात्वदशामां गुमाव्यो पण हवे एवो उद्यम करवो के जेथी चारगतिमां थतुं गमनागमन बंध पडी शाश्वत् सुख पामी शकाय। आ चेतने अनंतवार पुद्गलस्वरूपशरीर धारण करी पुद्गलस्वरूप भोजन इत्यादि भक्षण कर्यां, पण हजी ते थकी क्यारे दूर थशे ? अने शान्तिस्वरूप पामशे, ते मनमां विचारवुं. श्रीआनंदघनजी महावाक्यबोध कहे छे के :-

मान अपमान चित्त सम गणे, सम गणे कनक पाषाण रे।
वंदक निंदक सम गणे, इश्यो होय तुंज जाण रे शान्ति... ॥१॥
सर्व जगजंतुने सम गणे, सम गणे तृण मणि भाव रे।
मुक्ति संसार बिहु सम गणे, मुणे भवजळनिधि नाव रे शान्ति... ॥२॥

इत्यादि वाक्योथी आत्माने लागेलो मेल दूर करवा प्रयत्न करवो ए आत्माने हितशिक्षा छे। परनी निन्दाथी पराङ्मुख रहेवुं ने कोइनी निन्दा तेवा स्थळे सांभळवी पण नहि। परिणाम चढता रहे त्यां सुधी त्यां निवास उत्तम छे के जेथी विशेष लाभ थाय। समभावे सिद्धाचल गिरिराज पर मौन धारण करी चढवुं ने शरीरनी शक्ति मुजब परिणाम वधे तेम धर्मकार्य करवुं, उपर एकान्त जगाए बे त्रण कलाक एकाग्रचित्तथी आत्मस्वरूप विचारवुं। भव्य जीवे समजवुं के पुनः पुनः अहिं आववुं दुष्कर छे। कुटुंब उपर पण आ स्थळे गुस्से थवुं नहि, कोइने छेतरवुं नहिं, रत्नद्वीपे जइ परिपूर्ण कमावुं ए दृष्टांतमां खाली जाय ने भर्यो आवे, भर्यो जाय ने खाली आवे एमांथी खाली जाय ने भर्यो आवे ते धर्म आश्रयी जाणवुं। पापे करी भर्या जीवो अहिं आवे छे पण पाछा खाली थइ जाय छे, एवा आत्म सिद्धाचल स्थानने नमस्कार हो. ॐ ३ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

(संवत् १९५९ ना फागण वदि ५)

धार्मिक गद्य संग्रह भाग – १, पृष्ठ – ९०१

❊ ♦ ❊

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

Awakening

Acharya Padmasagarsuri

(from past issue...)

A benevolent man utilizes his strength for creation; not for destruction. All creatures enjoy their possessions. This requires no great strength or courage. Strength and courage are essential for charity, sacrifice and benevolence.

A man, who does not help others is not wealthy though he has wealth; is not a scholar though he has scholarship and he is not living though he is breathing. All beings must desire to render help to others by thought, word and deed in accordance with their mite.

Some Great Statements of Acharyashri Padmasagarsuriji

Just as fire purifies gold, tapasya (penance) purifies the soul.

If milk is cold, it become curds by means of sourness and we get butter; so also if the mind is calm by means of reflection we find solutions to our problems.

The absence of desire is sanyama or self-discipline. It is the primary necessity for righteous living.

Paramatma (the Lord) dwells in the heart which has the forgiveness.

If the mirror reflects the form of the body the scriptures reflect the form of the soul.

(Continue...)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अप्रगट ५ गुरु भास संग्रह

गणि सुयशचंद्र-सुजसचंद्रविजयजी

स्वाध्याय, छंद, गीत विगेरे काव्य प्रकारनी जेम 'भास' पण मारूगुर्जर भाषानो एक साहित्य प्रकार छे। आ प्रकारमां मुख्यपणे चरित्र संबंधि ऐतिहासिक वर्णना करायेली जोवा मळे छे। पूर्वे पण आ साहित्यमां विजयदानसूरि भास, विजयहीरसूरि भास, विजयसेनसूरि भास, विजयप्रभसूरि भास विगेरे घणी कृतिओ प्रकाशित थयेली छे। अहीं प्रस्तुत अंकमां संपादित करायेली कृतिओ मुख्यतया भास संज्ञक लघु रचनाओ छे।

कृति परिचय

प्रस्तुत कृतिओ विजयराजसूरिजीना जीवनचरित्रने दर्शावती सुंदर रचनाओ छे। जेमां प्रथम कृति कवि मानविजयजीनी ज्यारे शेष ४ कृतिओ मुनि दीप्तिविजयजीनी रचनाओ छे। बन्ने कृतिकारोए काव्यमां ऐतिहासिक सामग्रीरूपे पू. राजविजयसूरिजीना माता, पिता, जन्मनगर, वंश, गुरु तथा गच्छादिकनी टूंकमां विगतो दर्शावी शेष वर्णना रूपे पूज्यश्रीना देहलावण्यनी, पुण्यप्रतिभानी, चारित्रादि सद्गुणोनी तथा तेमना प्रभावनी वातो रसाळ शैलीमां रजू करी छे। बन्ने कृतिओ वांचता कृतिकारनी रचनाशैली सरळ, रसाळ तथा शब्दाडंबरथी रहित होवानुं जणाय छे, वळी पद्योमां प्रयोजायेल अंत्य प्रासोमां तथा काव्यमां करायेल देशीओनी पसंदगीमां कविना काव्यत्वनी साहजिक छाप उपसी आवे छे।

कृतिकार परिचय

आपणे आगळ जोयुं तेम प्रथम कृतिना कृतिकार कवि मानविजयजी छे, ज्यारे शेष ४ रचनाओ कवि दीप्तिविजयजीनी छे। बन्ने कविओनी परंपरा पू. हीरविजयसूरिजीनी परंपराना विजयराजसूरिजीना शिष्य, प्रशिष्य तरीके जोडायेली छे। बन्ने कविओमांथी कवि मानविजयजी १७मी सदीना विद्वान मुनि छे। तेमना वडे संस्कृत प्राकृतादि भाषामां घणुं साहित्य रचायुं छे। लेख विस्तारना भयथी अहीं तेमनी कृतिओनी सूचि न आपता वाचकोने तेना परिचय माटे जैन गुर्जर कविओ तथा जैन साहित्यनो संक्षिप्त इतिहास विगेरे ग्रंथ जोवानी अमे भलामण करीए छीए।

कवि दीप्तिविजय उपरोक्त कवि मानविजयजीना ज शिष्य छे। तेओ पोताना गुरु जेवा ज विद्वान होवानुं प्रस्तुत कृतिओ जोता अनुभवाय छे। गुरुमहाराज साहेबनी

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तुलनामां तेमणे जो के रचनाओ ओछी रची होय तेवुं लागे छे। तेमना द्वारा रचायेल मंगलकलश चोपाई, चतुर्विंशतिजिन स्तुति, ऋषभदेवजिन गीत, गुरु भास विगेरे थोडी रचनाओ प्रकाशित होवानी नोंधो मळे छे। कृतिकारनी विशेष विगतो माटे हजु भंडारोने फंफोसवानी जरूर छे।

खास उपरोक्त भास संज्ञक कृतिओना समुच्चयनी हस्तप्रतनी छायाप्रति आपवा बदल श्रीगोडीजी महाराज जैन देरासर ज्ञानभंडार(पायधुनी-मुंबई)ना व्यवस्थापकोनो खूब खूब आभार।

मानविजयजी कृत अप्रगट

विजयराजसूरि भास

॥५०॥ ***ऐँ नमः ॥ सकलपंडितशिरोमणी-पंडित श्रीपूश्रीमानविजयगुरुभ्यो नमः ॥***

॥ ओ सखी अमीय-रसाल किं, आंबो विष झरइं रे-ए देशी ॥

सरसति सामिनी माय किं, वाणी दीओ भली रे,
गुरुगुण गातां मुझ किं, पोहचइं मनरुली[१] रे।
श्री**विजयानंदसु(सू)रिंद**-पटोधर गाईइं रे,
श्री**विजयराजसु(सू)रिंद** किं, अह निशि ध्याईइं रे ॥१॥

सा. खीमा को नंद, अनोपम जाणीइं रे,
गमतादे कुखि रतन्न किं, सहूअ वखाणीइं रे।
रूपइं रतिनो कंत किं, हारि[२] मनावीओ रे,
वदन अनोपम नूर[३] किं, चंद हरावीओ रे ॥२॥

नयणां अतिहिं विशाल किं, कमलनी पांखडी रे,
वांकडी[४] भमुह[५] ते जाण किं, मयणनी धुंहडी[६] रे।
नासिका अति अणीआल किं, सूंडला[७] चांचडी[८] रे,
कंबुक[९] सरिखो कंठ किं, कमलनाल बांहडी[१०] रे ॥३॥

मोदक सम सोहिं गाल किं, श्रवण हींडोलडा[११] रे,
अधर[१२] प्रवाली[१३] रंग, हीरा सम दंतडा[१४] रे।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हृदय सोहइं सुविशाल किं, कटी सीह सोभती रे,
वाणी अमीय रसाल किं, भविवन[१५]-वरसती रे ॥४॥

जंघा कदली-थंभ किं, चरण-कमल भला रे,
जे सेवइं भलइं भाव किं, सुरतरु तस फल्या रे।
गति जीत्यो गजराज किं, चालइं चमकतो रे,
रूपइं मोह्या इंद्र किं, दिन दिन दीपतो रे ॥५॥

बलिहारी विजयराजसूरिसर तुम तणी रे,
पूरव पुन्य प्रमाण किं, पाम्यो बहु गुणी रे।
श्री**श्रीमाली**वंश-विभूषण-दिनमणी[१६] रे,
जगजंतुहितकार किं, पूरण सुरमणी रे ॥६॥

पंकज समरइं मेह किं, मोरा मेहलो[१७] रे,
तिम समरुं गुरुराय, गुणे करी गुणनिलो रे।
वाचकवृंद-ललाम[१८] किं, श्री**देवविजयगुरु** रे,
मानविजय गुण गाय किं, श्रीसंघ जयकरु रे ॥७॥

दीप्तिविजयजी कृत अप्रगट गुरु भास चतुष्क

विजयराजसूरि भास (१)

॥ देशी-परदी(जी?)यानी ॥

सरसति पदपंकज नमी रे, करजोडी मनोहार रे, गुरु गिरूआ।
श्री**विजयराजसूरि** गायस्युं रे, **तपगछ**नो सिणगार रे, गुरु गिरूआ ॥१॥

गुजर देश गुण-आगलो रे, **कडीय** नयर तिहां सार रे, गुरु गिरूआ।
व्यवहारी **खीमो** वसइं रे, नामिं **गमनादे** नारि रे, गुरु गिरूआ ॥२॥

तस कुखि पंकज-मधुकरु[१९] रे, अवतरिओ गुरुराय रे, गुरु गिरूआ।
नंदनवनइं सुरतरु परिं रे, वाधइं भवि गुण गाय रे, गुरु गिरूआ ॥३॥

सकल गुणे करी अलंकर्यो रे, जाणी अथिर संसार रे, गुरु गिरूआ।
श्री**विजयाणंदसूरि** कनइं[२०] रे, लीधो संयमभार रे, गुरु गिरूआ ॥४॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

योगिं[२१] जाणी पद थापीउं रे, वाध्युं तपगछ नूर रे, गुरु गिरूआ।
गोयम[२२] **सोयम**[२३] तुं जयो रे, मेरुतणी परिं धीर रे, गुरु गिरूआ ॥५॥
सुंदरी सवे टोलइं[२४] मिली रे, सजि करी सवि सिणगार रे, गुरु गिरूआ।
गुरुगुण-कमल सुवासना[२५] रे, लें भमरी परिं झंकार[२६] रे, गुरु गिरूआ ॥६॥
अजब रूप गुरुजीतणुं रे, मोदइं[२७] भविजन वृंद रे, गुरु गिरूआ।
श्री**मानविजय** बुध सुंदरु रे, सीस **दीप्ति**नइं द्यो आनंद रे, गुरु गिरूआ ॥७॥

विजयराजसूरि भास (२)

॥ रायजी भली द्रुपदी रे लाल- ए देशी ॥

निज गुरुचरण हृदय धरी रे, मागुं वचन सुरंग[२८],
गछधोरी श्री**विजयराजसूरि** गायस्युं रे।
श्री**विजयाणंद** पटोधरु रे, जस प्रणमइं नरपति रंग,
गछधोरी श्री**विजयराजसूरि** गायस्युं रे ॥१॥ निज...(आंकणी)
साह सोभागी सुंदरु रे, **सा. खीमो** श्रीवंत, गछधोरी...।
समतादे गजगामिनी रे, शीलादिक गुणवंत, गछधोरी... ॥२॥ निज...
तस कुखिं गुरु उपनो रे, सेव करइं सुरवृंद, गछधोरी...।
रूपवंत गुणसागरू रे, तेजइं जीत्यो दिणंद, गछधोरी... ॥३॥ निज...
वर तपगण-गगनांगणइ रे, उग्यो अविचल भांण, गछधोरी...।
संवेगी **वीर हीर**ना रे, वचन कीधां परमांण, गछधोरी... ॥४॥ निज...
सखी सवे टोलइं मिली रे, पहिरी नवरंग चीर, गछधोरी...।
गाय गुण गुरुजीतणां रे, उजला गंगा नीर, गछधोरी... ॥५॥ निज...
नासिका दीपसिखा[२९] जिसी रे, मुखइं जिस्यो द्विजराज[३०], गछधोरी...।
लोचन कमलदल समां रे, गतिं जीत्यो गजराज, गछधोरी... ॥६॥ निज...
कुमती(ति)-फंद[३१] दूरइं करइं रे, तुं जगि मोहनवेलि, गछधोरी...।
ए गुरुनी सेवा करइं रे, तस घरिं नित रंगरेलि[३२], गछधोरी... ॥७॥ निज...

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शीलवंत गुरु माहरो रे, वाणी गुहिर गंभीर, गछधोरी... ।
बुद्धि[३३] सुरगुरु जीपतो रे, तप करवइं[३४] वड वीर, गछधोरी... ॥८॥ निज...
नर नारी मोहइं सदा रे, देखी रूप अदभूत, गछधोरी... ।
पंडित **मांनविजय**तणो रे, **दीप्ति**नइं द्यो सुख संत, गछधोरी... ॥९॥ निज...

विजयराजसूरि भास (३)

॥ धन वेश्या हो सुगुण संसार किं, स्युं कीजइ होइं नातरिं हे-एहनी देशी ॥

श्रीमाता सरसति हो प्रणमी तुझ पाय किं, मागुं वचन मनोहरू [हे]।
तपगछपति हो गाउं मनरंग किं, श्री**विजयराजसूरीश्वरू** [हे] ॥१॥
....।
जस प्रणमइं हो वसुधाधिप-वृंद[३५] किं, नामइं सवि सुख पाईइं [हे] ॥२॥(आंचली)
सा. खीमो हो धनइं धनद समान किं, तस वंस-गगन-नभोमणी[३६] [हे]।
गमतादे हो तस घरणी[३७] जाणि किं, सयल सति(ती)मां सिरोमणी [हे] ॥३॥ जस...
तेणी जनम्यो हो गुरु पुत्र-रतन्न किं, रूपइं देव-पुरंदरू हे।
गतिं जीत्यो हो वर राज-मलार[३८] किं, वंछित दायक सुरतरू हे ॥४॥ जस...
टोलइं मिली हो सवे सहिर नारि किं, पहिरी पीतांबर पांभरी[३९] हे।
रंगइं गाइं हो गुरुजीनां गीत किं, नादइं जाणे किन्नरी हे ॥५॥ जस...
वयरागी हो समरस-भृंगार[४०] किं, वचन अमृतरस वरसतो हे।
प्रतिबोधइ हो भविजनना वृंद किं, पंच महाव्रत पालतो हे ॥६॥ जस...
गुरु देखी हो मोहइं नर नारि किं, जिहुं[४१] मोरा[४२] मनि मेहलो[४३] हे।
वर पंडित हो **मानविजय** कविराज किं, सीस **दीप्ति** कहइं गुरु ए भलो हे ॥७॥जस...

विजयराजसूरि भास (४)

॥ राजिंदो लावो हेमनाय- ए देशी ॥

सरसति सामिनी वीनवुं हे, मागुं वचन प्रधान।
श्री**विजयराजसूरि** गायस्युं हे, जस गुण मेरु समान ॥१॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सही जन वंदो हे गुरुराज (आंचली)

मुखमंडण **गुजरातिनुं** हे, **कडीय** नगर तिहां सार।

सा.खीमो तिहां वसइं हे, **गमतादे** घरि नारि ॥२॥ सही..

तास कुंखिं गुरु अवतर्यो हे, मानसरइं[४४] जिम हंस।

रूपइं मनमथ[४५] पीडीओ हे, जिहुं नारायण[४६] कंस ॥३॥ सही...

लहु वेसिं[४७] संजम लीओ हे, पालइं निरतीचार।

संजम उपरि नेहलो[४८] हे, समतारस-भृंगार ॥४॥ सही...

आंखडी कमलनी पांखडी हे, अधर प्रवाली-कंद।

दंत जिस्या दाडिम-कुली हे, मुख जिस्यो पुनिमचंद ॥५॥ सही...

भाग्यवंत गुणसागरू हे, सेवइं जस नरराज।

कंठइं कंबु हरावीओ हे, गतिं जीत्यो गजराज ॥६॥ सही...

चंद्रमुखी मृगलोचनी हे, गाइं गुरुगुण रंगिं।

ए गुरुनी सेवा करइं हे, ते पामइं सुख चंग[४९] ॥७॥ सही...

पंडित **मानविजय**तणो हे, **दीप्ति** कहइं कर जोडि।

पुण्यवंत गुरु ए सही हे, जीवो वरसनी कोडि ॥८॥ सही...

शब्दकोश

१. होंश, २. पराजय, ३. प्रकाश, तेज, ४. वांकी, ५. भ्रमर, ६. धनुष्य, ७. पोपट, ८. चांच, ९. शंख, १०. बाहु, ११. हींचका, १२. होठ, १३. परवाळो, १४. दांत, १५. भविकरूपी वनमां, १६. सूर्य, १७. मेघ, १८. कपाळना एक आभूषण(समान), १९. कुक्षिरूपी कमळ ने मधुकर (समान), २०. पासे, २१. योग्य, २२. गौतम(स्वामी), २३. सुधर्म(स्वामी), २४. टोळे, २५. सुवासितपणु, २६. गुंजारव, २७. खुश थाय, २८. सुंदर, २९. दीवानी ज्योति(जेवी), ३०. चंद्र, ३१. कुमतिरूपी जाळु, ३२. आनंद, ३३. बुद्धिथी, ३४. करवावडे करी, ३५. राजाओना समुदाय, ३६. वंशरूपी आकाशमां सूर्यसमांन, ३७. पत्नि, ३८. राजहंस, ३९. कीमती शेलु(वस्त्र), ४०. समतारूपी कळश, ४१. जेम, ४२. मोर, ४३. मेघ, ४४. मानसरोवरमां, ४५. कामदेव, ४६. कृष्ण, ४७. उमर, ४८. प्रेम, ४९. मनोहर.

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विनीतविजयजी रचित

२४ दंडक विचारगर्भित महावीरजिन विनती स्तवन

उपेंद्र डी. भट्ट

जैनदर्शनमां जीवविचार प्रकरण, नवतत्त्व प्रकरण, दंडक प्रकरण, लघुसंग्रहणी, बृहद् संग्रहणी, भाष्यत्रय, छ कर्मग्रंथ जेवा तात्त्विक ग्रंथो प्रारंभिक अध्ययन माटे विशेष लोकप्रिय अने आदरपात्र रह्या छे। आ ग्रंथो अने तत्त्वो पर पूज्य साधु-साध्वीजी भगवंतो, जैन तथा जैनेतर अनेक विद्वानो द्वारा प्राकृत, संस्कृत, गुजराती, हिंदी, अंग्रेजी भाषामां रचित तथा अनुदित विपुल मात्रामां साहित्य उपलब्ध छे अने ते ज तेनी लोकप्रियतानी प्रतीति करावे छे। आवा तात्त्विक ग्रंथो पर हजु पण घणुं अप्रगट साहित्य उपलब्ध छे। तेमांथी २४ दंडक विचारगर्भित महावीरजिन विनती स्तवन नामे एक देशी पद्य कृति अत्रे प्रकाशित करवामां आवे छे।

आचार्य श्रीकैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिरमां दंडकगर्भित स्तवन-स्तुतिमां आदिजिन, अजितजिन, शांतिजिन, पार्श्वजिन आदिनी ३८ जेटली कृतिओ नोंधायेली छे। तेमांथी ९ कृतिओ महावीरजिननी छे। तेमांथी एक अत्रे प्रस्तुत कराय छे।

कृति परिचय

प्रस्तुत कृति पूज्य श्रीविनीतविजयजी म.सा नी रचना छे। कृतिना प्रारंभमां कर्ता द्वारा प्रथम मंगलाचरण स्वरूप गाथा **“सरसति मनि समरी सदा, निजगुरु प्रणमी पाय। वीरजिणेसर आगलिं, वीनति करुं सुखदाय”** द्वारा सरस्वती देवीनुं स्मरण अने गुरुने प्रणाम करी भगवान महावीरस्वामीनी विनती स्वरूप रचनानो प्रारंभ करायो छे।

प्रस्तुत कृतिमां २४ दंडक तथा २४ द्वारनुं विस्तृत वर्णन करायुं छे। दंडकनो तात्त्विक विषय विशेष जोतां भगवाननुं स्तवन होय तेवुं प्रायः सामान्यजनने न लागे पण छे आ वीर प्रभुनुं स्तवन। कर्ताए मंगलाचरणमां कृतिना प्रारंभे ज **“वीरजिणेसर आगलिं, वीनति करुं सुखदाय”** कहीने स्पष्टता करी दीधी छे। वळी कृतिमां पण अनेक जग्याए तेनी स्मृति करावतां वाक्यो अने गाथाओ जोवा मळे छे। जेमके प्रारंभिक गाथाओमां ज लख्युं छे के-

हे प्रभु तुं चोवीसमो जिनेश्वर गुणमणिरत्नो भंडार छे, तारा चरणोनी सेवाथी संपत्तिनी प्राप्ति थाय छे। तारा दर्शन विना जीव अनंतिवार चारे गतिमां चोविसे य दंडकोमां फरी फरी केटलाय जन्मो धारण करे छे। वळी कृतिना अंते पण कह्युं छे के-

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सघला भाव ए श्रीजिनवरमतिं, पाम्या अनंती रे वार।
हुं सेवक प्रभुं तुं साहिब, सहि ऊतारो भवपार ॥७३॥
वीरजिणंद कृपा करी, वीनति चित अवधारि।
भवसायर जिम तुं तर्यो, तिम प्रभु सेवक तारि" ॥७४॥

हे प्रभु में आ बधा दंडकोमां अनंतीवार परिभ्रमण कर्युं छे, ह्वे तुं तेमांथी मने उगार। कृपा करीने मारी विनंतीने स्वीकार। जेम तुं भवसागरने तर्यो छे तेम मने पण तार वगेरे...। अंते कर्ताए पुनः जणाव्युं के-

वीनती ए वीरजिणंदनी, भणें गुणें जे रंगिं जी।
तस घरि रिद्धिवृद्धि सुखसंपति साता होइं अंगि जी ॥७८।

वीरप्रभुनी आ विनतीरूप स्तवनने जे भावे भणशे गणशे तेने घरे ऋद्धिनी वृद्धि, सुख-संपत्ति अने शाता थशे। एक ढाळमां तो "त्रिसलानंदन वीरजिन इंम कहइं" करीने भगवानना नामनी आंकणी ज मूकी दीधी छे। अर्थात् आ दंडकगर्भित कृतिमां सांगोपांग महावीरजिन विनंतीरूप रचना छे, तेमां कोई संशय नथी।

कृतिनी रचना श्रीशंखेडातीर्थ मध्ये श्रीसुपार्श्वनाथ भगवानना सान्निध्यमां कराई छे। कृतिनो रचना समय (**संवत द्विजसायरगुणकर मित वरसि**) वि.सं. १७३२ श्रावण मास, शुक्ल पक्ष, तृतीया, गुरुवार छे।

जीव चौद राजलोकमां नीचेथी उपर सुधी जे जे रीते दंडाय तेनुं वर्णन जेमां होय ते दंडक.

२४ दंडकोना नाम - नारकी, असुरकुमार, नागकुमार, सुवर्णकुमार, विद्युत्कुमार, अग्निकुमार, द्वीपकुमार, उदधिकुमार, दिक्कुमार, वायुकुमार, स्तनितकुमार, पृथ्वी, अप्, तेज, वायुकाय, वनस्पति, बेइन्द्रिय, त्रेइन्द्रिय, चउरेन्द्रिय, गर्भज तिर्यंच पंचेन्द्रिय, गर्भज मनुष्य, व्यंतर, ज्योतिष्क, वैमानिक ।

२४ द्वार नाम – शरीर, अवगाहना, संघयण, संज्ञा, संस्थान, कषाय, लेश्या, इन्द्रिय, समुद्घात, दृष्टि, दर्शन, ज्ञान, अज्ञान, योग, उपयोग, उपपात, च्यवन, स्थिति, पर्याप्ति, किमाहार, संज्ञी, गति, आगति, वेद।

आ कृतिमां वर्णवेल पदार्थो सर्वविदित होवाथी तेनुं विशेष वर्णन करवानी चेष्टा करवी ते सूर्यने दीपक दर्शाववा समान छे। मात्र एक अप्रकाशित कृति प्रकाशित थाय ते ज अत्रे भावना छे।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कर्ता परिचय

कृतिनी अंतमां आपेल कलश आधारित तपगच्छ भूषण पूज्यश्री विजयराजसूरि म.सा, ना राज्यकाळमां पंडित श्रीदर्शनविजयजी गणिना शिष्य श्रीप्रीतिविजयजीना शिष्य श्रीविनीतविजयजी म.सा. आ कृतिना कर्ता छे।

पूज्य श्रीविनीतविजयजी द्वारा रचित प्रस्तुत कृति तथा अन्य कृति १२४ अतिचारगर्भित महावीरजिन स्तवन, गाथा-१२५, आ बन्नेमां रचना वर्ष-वि.सं.१७३२ छे। कर्ता द्वारा लखायेल हस्तप्रतमां छेल्लुं वर्ष १७५१ प्राप्त थाय छे। आना आधारे कर्तानो समय स्पष्ट थाय छे।

आचार्य श्रीकैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिरमां कर्ताना स्वहस्ते लखायेल कुल ४ हस्तप्रतो अने स्वरचित कुल १६ कृतिओ नोंधायेली जोवा मळे छे।

कर्ताना स्वहस्ते लखायेल हस्तप्रतो-

१) लघुजातक सह वृत्ति प्रत सं. १०२०१६ वर्ष वि.सं. १७३६

२) श्राविका मधुरीबाई वाचनार्थ २४जिन स्तुत्यादि संग्रह प्रत सं. १०३१७, वर्ष वि.सं.१७३६

३) श्राविका रहियाँबाई तथा सहजबाई पठनार्थ उपदेशमाळानी प्रत सं. ८९८६०, वर्ष वि.सं.१७४१

४) श्राविका कल्याणीबाई तथा छाडकुंअरीबाई पठनार्थ मौनएकादशीपर्व गणणुंनी प्रत सं. ११४२२१ वर्ष वि.सं.१७५१

कर्तानी कुल रचनाओ-

१) महावीरजिन स्तवन-१२४ अतिचारगर्भित (अप्रगट)

२) मुहपत्तिपडिलेहण सज्झाय (अप्रगट)

३) महावीरजिन स्तवन-२४ दंडकविचारगर्भित(अप्रगट)

४) कुंथुजिन स्तवन

५) अरजिन स्तवन (अप्रगट)

६) कल्पसूत्र-(मा.गु.)वार्तिक (अप्रगट)

७) नमिजिन स्तवन

८) २४ जिन नमस्कार-अनागत (अप्रगट)

९) पर्युषणपर्व चैत्यवंदन

१०) पर्युषणपर्व चैत्यवंदन

११) पर्युषणपर्व चैत्यवंदन

१२) पर्युषणपर्व चैत्यवंदन (अप्रकाशित)

१३) महावीरजिन चैत्यवंदन

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१४) पर्युषणपर्व चैत्यवंदन

१५) सुमतिजिन स्तवन

१६) पर्युषणपर्व चैत्यवंदन

प्रत परिचय

प्रस्तुत कृतिथी संबंधित प्रत आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर, कोबामां उपलब्ध छे। हस्तप्रत संख्या ५५६५६ ना आधारे कृतिनुं संपादन करवामां आवेल छे। आ प्रतमां कुल-७ पत्रो छे। पत्र १अ थी ७अ सुधीमां प्रस्तुत कृति छे, ७अ थी ७आ सुधी कुंथुजिन स्तवन (गाथा-५) तथा ७आ पत्रमां अरजिन स्तवन (गाथा-५) लहिया द्वारा लखवामां आवेल छे। आ त्रणे कृतिना कर्ता विनीतविजयजी म.सा. छे। आ प्रतनुं प्रतिलेखनवर्ष अनुमानित वि.सं.१८मी सदी पूर्वार्ध होय तेम जणाय छे। रचनाकाळना निकटवर्ती समयमां लेखन होवानी प्रबळ संभावना छे। अक्षर तथा लेखन शैली सुंदर स्पष्ट अने सुवाच्य छे। प्रतनी मध्य अक्षरयुक्त फुल्लिका अने पार्श्वरेखा बाहर लाल रेखांकित आकृति आपवामां आवेल छे।

कर्ताना स्वहस्ते वि.सं. १७४१मां राजनगरनी एक धर्मानुरागी श्राविका माटे लखवामां आवेल उपदेशमाळा सह बालावबोध एवं टबानी १९० पानानी एक हस्तप्रत आचार्य श्रीकैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिरमां क्र. ८९८६० पर उपलब्ध छे। आ प्रत अने प्रस्तुत कृतिनी प्रत आ बन्ने प्रतोना लेखनमां केटलीक साम्यता जोतां अनुमान थाय छे के प्रस्तुत प्रत पण कर्ताना स्वहस्ते लखाई होय। आना परथी ए पण जणाय छे के कर्ता सुंदर लेखन पण करी जाणता हता।

आ कृतिने प्रकाशित करवानी तक आपवा बदल आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर, कोबा तथा संपादन कार्यमां सहयोग करवा बदल पं. श्री गजेन्द्रभाई शाहनो हुं खुब-खुब आभार व्यक्त करुं छुं।

२४ दंडक विचारगर्भित महावीरजिन स्तवन

॥ *दूहा* ॥

सरसति मनि समरी सदा, निजगुरु प्रणमी पाय।
वीरजिणेसर आगलिं, वीनति करुं सुखदाय ॥१॥

तुं जिनवर चोवीसमो, गुणमणि रयण भंडार।
चरणकमल तुझ सेवतां, संपद लहीइं सार ॥२॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तुझ दरिसन विन साहिबा, जीव अनंती वार।
चिहुं गति चोवीस दंडके, फिरत कर्या अवतार ॥३॥

तिहां कोईक शुभ कर्मना, उदय थकी जिनराज।
मणुअ जनम जिनधर्मनी, प्रापति हुई सुख काज ॥४॥

चोवीस दंडकना कहुं, विवरी भेद उदार।
श्रुतसायरथी मिं लह्या, ते सह गुरु उपगार ॥५॥

॥ ढाल राग गोडी ॥ आदीसर अरिहंत अवधारो ए देशी ॥

प्रथम भेद नारकी य वखाणुं, भुवनपती दश भेदे जाणुं।
पृथिवादिक पांच भेद विचारो, बितिचउरिंदी ते चित धारो ॥६॥

गब्भय तिरि पंचेंद्री मनुष्य, व्यंतर जोईस विमानिक दष्य।
ए चोवीस दंडक नाम, विवरण तास कहुं गुणधाम ॥७॥

पण अंग त्रिक अवगाहन होय, संघयण षट संज्ञा दश जोय।
संठाण षट क्रोधादिक च्यार, लेस्या षट ष(प)ण इंद्री द्वार ॥८॥

सात समुदघात दृष्टी त्रिण, दर्शन चउ पण ज्ञान रतन्न।
त्रिण्य अज्ञान निं पन्नर योग, वली कहुं द्वादश उपयोग ॥९॥

उववाय च्यवन अनिं आऊषुं, छ पर्याप्ति आहार विशेषुं।
संज्ञा त्रिण गति आगति वेद, त्रिक चोवीस ए द्वारना भेद ॥१०॥

अदारिक कार्मण तैजस एह, वैक्रिय आहारक मणुं पंच देह।
गर्भज तीर्यंच अनिं समीर, आहारक वर्जित च्यार सरीर ॥११॥

वैक्रिय तैजस कार्मण जेह, नारकि देव तनुं त्रिक एह।
पृथवी पाणी तेउ वनसपती, विगलिं प्रथम तनु त्रिण्यनी सकती ॥१२॥ द्वार ॥

वणसई वरजित थावर च्यार, असंख्य भाग अंगुल तनु धार।
उतकृष्ट जघन्यि एह भाष्युं, दंडके शेषे जघनि एह दाख्युं ॥१३॥

पौणठ धणु षट अंगुल समांन, पहेंली नरकिं ए भू घनमांन।
पनर धनुष अढी हाथ उत्तंग, बीजी नरकिं नारकी अंग ॥१४॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

त्रीजीइं एम कहइं त्रिभुवन ईस, हाथ एक धनुष एकत्रीस।
धनुष साढांबासठि लहीइं, चोथी नरकिं मान ए कहीइं ॥१५॥

पांचमी नरकिं तनु विस्तार, धनुष सवासो जिन कहइं सार।
धनुष अढीसिं सुंणो भवि प्राणी, छठी नरकिं देह वखांणी ॥१६॥

धनुष पांचसिं होइ उतकृष्ट, सातमी नरकिं तनु ए गरीष्ठ।
अश्रुभ अश्रुचित पुदगल जेह, तेणिं ए उपचित नारकि देह ॥१७॥

भवणवई व्यंतर जोईस, सौधर्म ईसानिं कहइं जगदीस।
सात हाथ तनु होइं उतकृष्ट, सनत माहेंद्रिं रयणी षष्ट ॥१८॥

व्रह्म लांतकिं रयाणी पांच, श्रुक्र सहसारिं च्यार ए वाच।
आनत प्राणत आरण जोय, अच्युत ए चउइं त्रिक कर होय ॥१९॥

नव ग्रैवेकिं होइं दो हस्त, पंचानुत्तरिं एक प्रसस्त।
गब्भय तिरि तनुं जौअण हजार, बेअंद्री तनुं जोअण बार ॥२०॥

वणसई सहस जोअण झाझेरुं, नर तेंदरी त्रिण गाउ भलेरुं।
जोअण एका चारिंद्री भणीइं, उतकृष्ट अंग श्रुतिं ए सुणीइं ॥२१॥

प्रारंभ समइं होइं वैक्रिय अंग, असंख्य भाग अंगुलनो चंग।
सुरनर साधिक योजन लक्ष, नव योजन तीर्यंच प्रतक्ष ॥२२॥

निज तनुंथी बिमणुं ए सुणवुं, नारकि वैक्रिय सरीरनुं भणवुं।
उतकृष्टो सुणो वैक्रिय काल, नारकिं अंतरमुहुर्त्त विशाल ॥२३॥

च्यार मुहुर्त्त तीर्यंच मनुष्य, चउ देवानिं होइं एक पख्य।
एह कहिउं अवगाहन द्वार, हवइं ए भणुं संघयण विचार ॥२४॥ द्वार २॥

वज्रऋषभ ऋषभ नाराच, नाराच तिम वली अर्द्धनाराच।
कीलिका छेवठुं जेह, छ संघण कह्यां जिन एह ॥२५॥

गब्भय नर तिरी षट संघयणी, थावर नारकि सुर असंघयणी।
बि ति चउरिंदी छेवठुं एक, संज्ञा द्वार कहुं सुविवेक ॥२६॥ द्वार ३॥

आहार भय मैथुन निं क्रोध, परिग्रह मांन माया दुरबोध॥
लोभ लोक ओघ संज्ञा वखांणो, चोवीस दंडके ए दस जांणो ॥२७॥ द्वार ४॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ दूहा ॥

षट संस्थान सुणो कहुं, समचतुरस्र न्यग्रोध।
सादी वामन कुबज ए, हुंडक नामथी बोध ॥२८॥

॥ ढाल एकवीसानी ॥

नर तिरीआ जी होइं षट संठाणि रे, चउ देवा जी सम चउरिंसिं जाणि रे।
नारय विगला जी होइं हुंडीकार रे, वण तेऊ जीवायू पांणी आकार रे॥ त्रोटक ॥
आकार नानाकार सुचि सम ध्वज पंपोट अनुक्रमि कह्या।
पृथवी कहइं मसूर चंदाकार हुंडज ए लह्या ॥ द्वार ५ ॥
विना केवली जीव सहुनिं ओघि च्यार कसाय ए ॥द्वार ६ ॥
द्वार सातमुं लेस्या केरुं सांभलो सुखदाय ए ॥२९॥
कृष्ण लेस्या जी नील कापोत अनीष्ठ रे,
तेउ चोथी जी पदम श्रुकल कहि ईष्ट रे।
छए लेस्या जी गब्भय तिरि मणु सेव रे,
छेहली लेस्या जी त्रिक वैमानिक देव रे ॥ त्रो० ॥
देव योतिषि कल्पद्विकमां, तेजो लेस्या एक कही।
कल्पत्रिकिं तिम पदम, लेस्या शुक्ल लांतादिकिं लही ॥
नारकी तेउ वाउ विगलिं, प्रथम त्रिक होइं लेस ए।
शेष चऊदे दंडकमांहि, पढम चउ उवएस ए ॥३०॥ द्वार ७ ॥
द्वार आठमें जी इंद्री पांच प्रकार रे, आकारादिक जी भेद कहुं सुविचार रे।
करणेंद्री जी कदंबफूल परिं गोल रे, नयनेंद्री जी मसूर चंद्रसम तोल रे ॥ त्रो० ॥
समतोल अइमुत्त कुसुम सरिषो, घ्राणाकार कह्यो खरो।
रसन क्षुर प्राकार स्पर्शन, नानाकार हृदइं धरो।
करण चक्षु घ्रांण बाहुलि, असंख्य भाग अंगुल तणो,
स्पर्शेंद्री तिज तनु विस्तारिं अंगुल पुहुत्त रसना भणो ॥३१॥
बार जोअण जी करण विषय परतक्ष रे,
नयनेंद्री जी साधिक योजन लक्ष रे।

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

फासेंद्री जी रसनेंद्री तिम घ्रांण रे,
नव योजन जी उतकृष्ट विषय वखांणि रे ॥ त्रो० ॥ द्वार ८ ॥

वखांणीइं समुग्घाय, संज्ञी मनुष्यनिं साते वली।
वेअण कसाय नि मरण वैक्रिय, तैजस आहारक केवली।
गब्भय तीर्यंच देवतानिं, प्रथम समुद्धात पांच ए।
नारय वायु निं सेस दंडके प्रथम चतुःकत्रिक वाच ए ॥३२॥ द्वार ९ ॥

दृष्टि त्रिकनुं जी दसमुं द्वार पवित्त रे, सम्मामिछा जी उभय दृष्टि समचित्त रे।
पांच थावर जी मिथ्यादृष्टिं होय रे, विगलेंद्रीनिं जी सम्मामिछा दोय रे ॥ त्रो० ॥

सम्मामिछा दोय दृष्टी मिश्र त्रीजी जाणीइं।
शेष दंडके एहनि सुणो, दर्शन द्वार वखाणीइं ॥द्वार १०॥
चक्षुदर्शन अनिं अचक्षु, अवधि दर्शन केवली।
च्यार दर्शन नामथी ए, विशेषिं सुणयो वली ॥३३॥

चोरिंद्रीनिं जी पहेंलां दर्शन दोय रे,
मनुष्यनिं जी च्यारे दर्शन होय रे।
पण थावर जी बितिनिं अचक्षुए करे,
शेष दंडके जी त्रिक दर्शन सुविवेक रे ॥ त्रो०॥ द्वार ११ ॥

सुविवेक आणी सुणो हो प्राणी, द्वार द्वादसमें कहुं।
मति श्रृत अवधि मनपज्जव, केवल पांच ए चित वहुं।
अन्नाण त्रिण तिम द्वार तेरमें, मई सुअ अवही नाम ए।
ज्ञान पांच अज्ञान त्रिंणना, चोवीस दंडके ठाम ए ॥३४॥

सहु तिरीआ जी नारय चउविह देव रे,
भजनाइं जी नाण अनाण त्रिकमेव रे।
पण थिरनिं जी पहेलां दोय अनांण रे,
इंम विगलनिं जी दोय अनाण निं नांण रे ॥ त्रो० ॥

नाण अनांणनी होइं भजना, मनुष्यनिं कोविद कहइं।
ज्ञान पांच अज्ञांन त्रिण तिम, जिन वचने थी ते लहइं।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वीरजिनवरिं जे प्रकास्या, आगम उदधीनइं विषइं ॥ द्वार १२॥१३॥
द्वार चउदमइं सुणो भविजन, पनर योग कवि ते अखइं ॥३५॥

॥ दूहा ॥

सत्य असत्य सत्या मृषा, असत्य मृषा चउ भेअ।
मनोवाकसुं जोडतां, आठयोग अभिधेअ ॥३६॥

वैक्रय वैक्रियमिश्र तिम, आहारक आहारकमीश्र।
ओदारिक निं मीश्र वली, कार्मण काय विसीश्र ॥३७॥

॥ढाल गोडी त्रिपदी॥

ओदारिक अनिं मीश्र रे, आहारक द्विक तजी योग इग्यार नारय देवना ए।
तीर्यंचनिं योग तेर रे, आहारक द्विक वरजि पनर योग मणु सेवना ए ॥३८॥

अंग ओदारिक दोय रे,
असत्य मृषा भाषा कार्मण योग चउ विगलनिं ए।
कार्मण ओदारिक दोय रे,
वैक्रिय द्विक तनुं त्रिक पंच योग थिर अनिलनिं ए ॥३९॥ द्वार १४ ॥

दर्शन चउ पण ज्ञान रे, तिम त्रिण अज्ञान उपयोग बार ए मणु लही ए।
नव नारय तिरि देव रे, केवल मणपज्जव केवल दर्शन ए त्रिक नही ए। ॥४०॥

मइ सुअ नाण अनाण रे,
अचक्षुदर्शन पण उपयोग छइं विगलना ए।
चउरिंद्रीनिं होय रे,
उपयोग षट वली चक्षुदर्शननी योजना ए ॥४१॥
दर्शन अचक्षु एक रे,
मई सुअ अन्नाण उपयोग त्रिक थावर तनुं ए ॥ द्वार १५ ॥
द्वार सोलमुं सार रे, उतपतिनुं कहुं सतरमुं तिम च्यवननुं ए ॥४२॥

संख्याता मणु योनिं रे, एक समें जीवा असंख्य अनंत वनि ऊपजें ए।
होइं संख्य असंख्य रे, नारय सुर विगला गब्भय तिरि तिम नीपजे ए ॥४३॥

असन्नी मनुष्य असंख्य रे,
एक समय कह्या मलमूत्रादिक स्थानमां ए।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

थावर च्यार असंख्य रे,
उववाय एक समें एह संख्या वली च्यवनमां ए ॥४४॥ द्वार १६॥१७॥

बावीस सगति दस वास रे, सहस उतकृष्ट आयु पृथिव्यादिकिं कहिउ ए।
अगनि आयु दिन त्रिण्य रे, त्रिण्य पल्योपम नर तिरि आयु श्रृतिं लहिउं ए ॥४५॥

स्वरगिं पहेंले दोय रे, बीजइं साधीक त्रीजें सायर सातनुं ए।
चोथइं साधिक सात रे, पांचमें दस तणुं छठें आयु कहिउं चउदनुं ए ॥४६॥

सतर सायर उतकृष्ट रे, स्वरगिं सातमें अढार सायर कहिउं आठमइं ए।
नोमें सायर ओगणीस रे, दशमें विंशति एकवीस सायर इग्यारमें ए ॥४७॥

बारमइं सायर बावीस रे, सुंणो नव ग्रैविकिं सायर इंकेकुं वधारीइं ए।
नोमें सागर एकत्रीस रे, पांच अनुत्तरिं सागर तेत्रीस धारीइं ए ॥४८॥

रतनप्रभादिक साते रे, आयु उतकृष्ट एक त्रिण सत दस सायरू ए।
सतर सागर बावीस रे, सागर तेत्रीस अनुक्रमिं कहइं जिनवरू ए ॥४९॥

स्थिति कही उतकृष्ट रे, स्वरगिं सुर तणी तिम वली साते नरकनी ए।
वरस लक्षाधिक पल्य रे, जोइस व्यंतरा स्थिति उतकृष्ट पल्य एकनी ए ॥५०॥

देसिं ऊणां दो पल्य रे, नवनिकायनिं असुर सागर एक झाझैरुं ए।
द्वादस ओगणपंचास रे, वरस दिन षटमास उतकृष्ट आयु विगल केरुं ए ॥५१॥

स्थिति आयुनि जघन्य रे, अंतरमुहूर्त्तनी पृथिव्यादिक संपद तणी ए।
सारय(?) व्यंतर दोय रे, भुवणवई तणी स्थिति दस सहस वरस भणी ए ॥५२॥

पल्यनो आठमो भाग रे,
जघनि स्थितिं कहिओ योतिषीनिं सूत्रथी लह्यो ए।
जघनि स्थिति वली होय रे,
वैमानिक सुरा एक पल्योपम जिन कहिओ ए ॥५३॥ द्वार १८ ॥

॥ दूहा ॥

पजत्ति आहार सरीरनी, इंद्री सासोसास।
भाषा मण षट नामथी, विवरण सुणयो तास ॥५४॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

।। ढाल राग मेवाडो धन्यासी ।। प्रीतडी पनोता रे, पहेंली तिं करी ए देशी ।।

सुर नारय तीरि नर, षट पज्जत्ति थावरनिं पहेली रे च्यार ।।
मण पज्जत्ती रे वरजी, पांच ए विगलनिं एह विचार ।।५५।।

।। त्रिसलानंदन वीरजिन इंम कहइं आंचली ।। द्वार १९ ।।

ओघिं सघला रे जीवनिं आहार ए, छ दिसि कहें जिनराय।
लोकांतिं वये छइं वली जीव ए, पंचादिक भजनाय ।।५६।। त्रि० ।। द्वार २० ।।

पहेंली संज्ञा रे दीरघकालिकी, हेतूवादोपदेस।
दृष्टीवादोपदेसिकी त्रिण्य ए, सुंणो हवइं एहनो विसेस ।।५७।।

त्रिकालनी दरसी रे संज्ञा शुभ कही, दीरघकालिकी नाम।
तीरयंच नारकि चउविह देवनिं, एह होइं शुभ काम ।।५८।। त्रि० ।।

ईष्ट पदारथ ये स्वइं आदरइं, अनीष्ट करइं परीहार।
हेतूवादोपदेसिकि ते भली, छिति चउनिं ए उदार ।।५९।। त्रि० ।।

समकित दृष्टी रे जीव यथा सत्तिं, परिहरइं राग निं द्वेष।
दृष्टीवादोपदेसिकी संज्ञानुं, लक्षण एह विसेष ।।६०।। त्रि० ।।

दृष्टीवाद रे दीरघकालिकी, मनुष्यनिं संज्ञा ए दोय।
थावर पांचे रे श्रीजिनवर कहइं, संज्ञा रहीत ज होय ।।६१।। त्रि०।। द्वार २१।।

पज्जपणिंदी रे मणुआ तीर्यंच, चउविह देवेसु जंति।
पांचे दंडके रे सुर आगमन करइं, सुणयो कहुं ते एकंति ।।६२।। त्रि० ।।

तीरयंच मणुआ रे पंचेंद्री पज्जा, संष्यायूना पजत्त।
भूदग प्रत्येक वनसपतिमांहि, सुर आगम ए पवत्ति ।।६३।। त्रि० ।।

मणुआ तिरीआ रे गब्भय पज्जत्ता, संष्यायूना रे जेह।
नरके साते रे तेहनि गमन कहिउं, आगमन वली एह ।।६४।। त्रि० ।।

नारकि वरजी रे ओघिं सहुं जीवा, निज निज कर्मानुसार।
पृथवी पाणी रे मांहि ऊपजइं, वनसपतीइं विचार ।।६५।। त्रि० ।।

पृथिव्यादीक दस पदे ऊपजें, विगल वण पुढवी रे पांणि।
पृथिव्यादीक दसनो उववाय, विगल तेऊ वाऊइं जांणि ।।६६।। त्रि० ।।

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पृथिव्यादीक नव किं गमन करइं, तेऊ वाऊ रे दोय।
गब्भय मणु तिरीआ रे चोवीस दंडके, गमनागमनं ए जोय ॥६७॥ त्रि० ॥
बावीस दंडथी रे आव्या मणु होइं, तेऊ वाऊ नइं ति ॥ द्वार २२॥२३॥
स्त्री पुं नपुंसक नामथी वेद ए, तिरि मणु त्रिणे वहंति ॥६८॥ त्रि० ॥
चउविह सुरनिं रे वेद कह्या वली, इच्छी पुरुसा रे दोय।
नारकी थावर विगल ए त्रिण्यनिं, वेद नपुंसक होय ॥६९॥ त्रि० ॥ द्वार २४ ॥
चोवीस दंडके रे अल्प सहू थकी, होइं पजत्ता मनुष्य।
असंख्य गुण तेहथी रे बादर अगनिमां, असंख्य गुण वेमाणि मुख्य ॥७०॥ त्रि० ॥
असंख्य गुण भुवणा रे नार व्यंतरा, संख्य गुण योतिषि तेह।
असंख्य चोरिंद्री रे पण तिरि बिति वली, विशेषाधिक कह्या एह ॥७१॥ त्रि० ॥
असंख्य गुण भूदग वायू वणसई, अनंतगुणी तेहथी प्रमांणि।
अधिका अधिकुं रे एम अनुक्रमिं, अल्पबहुत्व वखांणि ॥७२॥ त्रि० ॥
सघला भाव ए श्रीजिनवरमतिं, पाम्या अनंती रे वार।
हुं सेवक प्रभुं तुं साहिब, सहि ऊतारो भवपार ॥७३॥ त्रि० ॥

॥ दूहा ॥

वीरजिणंद कृपा करी, वीनति चित अवधारि।
भवसायर जिम तुं तर्यो, तिम प्रभु सेवक तारि ॥७४॥

॥ ढाल राग धन्यासी ॥ सबल बलद वृषभो भो तुं धोरी ए देशी ॥

इंम अनुक्रमिं चोवीसे दंडक, फरस्यां में जिनराज जी।
तुझ सेवाथी हवइं सहुं माहरां, सीधां वंछित काज जी ॥
सिद्धारथ कुल गयणदिवाकर, त्रिसलाउ अरिहंस जी।
ये सेवइं प्रभु तुझनिं अहनिसि, तेहनौ उत्तम वंस जी ॥७५॥
समरथ साहिब वीरजिणेसर, सेवकनिं सुख दाता जी।
भवभयभंजन सुरनररंजन, तुं मोटो जग त्राता जी ॥
तुं साहिब प्रभु हुं तुझ सेवक, कृपा करो जिनचंद जी।
तुझ सेवाथी जिम हुं पामुं, अविचल पद माहानंद जी ॥७६॥

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्री **संखेडानयर** विराजित, राजित गुण गंभीर जी।
श्री सुपास जिनवर सुपसाइं, स्तवीओ श्री जिनवर जी ॥
सास्त्र विरुद्ध विचार जे होइं, ते कवि करयो सुद्ध जी।
भणें गुणें जे भविजन रंगिं, तेहनी होइं सुबुद्धि जी ॥७७॥

संवत द्विज सायर गुणकर मित, वरसिं नभ शुभ साम जी।
सित पक्षिं त्रितीआ गुरुवारिं, तवन करिउं सुविसाल जी।
वीनती ए वीरजिणंदनी, भणें गुणें जे रंगिं जी।
तस घरि रिद्धि वृद्धि सुख संपति साता होइं अंगि जी ॥७८॥

॥ कलस ॥

तपगच्छ भूषण विगत दूषण, **श्रीविजयराजसूरीसरू**।
तस राजिं पंडित यस अखंडि, **श्रीदर्शनविजय** गणि हितकरू।
तससी राजइं बहु दिवाजइं, श्री **प्रीतिविजय** कोविदवरू।
तस चरण सेवित विनीतविजइं, थुण्यो वीरजिणेसरू ॥७९॥

॥ इति श्री चोवीस दंडक विचारमय श्री वीरजिन स्तवनं संपूर्ण ॥ श्रीरस्तु ॥

श्रुतसागर के इस अंक के माध्यम से प. पू. गुरुभगवन्तों तथा अप्रकाशित कृतियों के ऊपर संशोधन, सम्पादन करनेवाले सभी विद्वानों से निवेदन है कि आप जिस अप्रकाशित कृति का संशोधन, सम्पादन कर रहे हैं अथवा किसी महत्त्वपूर्ण कृति का नवसर्जन कर रहे हैं, तो कृपया उसकी सूचना हमें भिजवाएँ, जिसे हम अपने अंक के माध्यम से अन्य विद्वानों तक पहुँचाने का प्रयत्न करेंगे, जिससे समाज को यह ज्ञात हो सके कि किस कृति का सम्पादनकार्य कौन से विद्वान कर रहे हैं? इस तरह अन्य विद्वानों के श्रम व समय की बचत होगी और उसका उपयोग वे अन्य महत्त्वपूर्ण कृतियों के सम्पादन में कर सकेंगे.

निवेदक - सम्पादक (श्रुतसागर)

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

धर्मकथानुयोगनी महत्ता अने श्री देवभद्रसूरिकृत कथारत्नकोश*

मुनि श्री पुण्यविजयजी

(गतांकथी आगळ...)

आ उपरांत आचार्य श्री जिनचंद्रसूरिविरचित संवेगरंगशाला ग्रंथनी पुष्पिका, जे आचार्य श्री देवभद्रसूरिना संबंधमां उपयोगी छे, ते पण जोई लईए-

"इति श्री**मज्जिनचन्द्र**सूरिकृता तद्विनेय**श्रीप्रसन्नचन्द्र**सूरिसमभ्यर्थितेन **गुणचन्द्र-गणि**[ना] प्रतिसंस्कृणा **जिनवल्लभ**गणिना च संशोधिता संवेगरङ्गशालाऽऽराधना समाप्ता ॥"

उपर जे चार ग्रंथोनी प्रशस्ति अने पुष्पिकानो उल्लेख करवामां आव्यो छे, ए उपरथी आचार्य श्री देवभद्रसूरिना संबंधमां नीचेनी हकीकत तरी आवे छे :

आचार्य श्री देवभद्र, श्री सुमतिवाचकना शिष्य हता। आचार्य पदारूढ थया पहेलां तेमनुं नाम गुणचंद्र गणी हतुं, जे नामावस्थामां तेमणे वि. सं. ११२५ मां संवेगरंगशाला नामना आराधनाशास्त्रने संस्कारयुक्त कर्युं अने वि.सं. ११६१ मां महावीरचरित्रनुं निर्माण कर्युं हतुं।

संवेगरंगशालानी पुष्पिकामां "तद्विनेयश्रीप्रसन्नचन्द्रसूरिसमभ्यर्थितेन गुणचन्द्र-गणिना" तथा महावीरचरित्रनी प्रशस्तिमां -

सूरि पसन्नचंदो चंदो इव जणमणाणंदो ॥ तव्वयणेणं सिरिसुमइवाइगाणं विणेयलेसेणं। गणिता गुणचंदेण'

ए मुजबना आचार्य श्री प्रसन्नचंद्र अने श्री देवभद्रसूरिना पारस्परिक संबंधना दूरभावने सूचवता **"समभ्यर्थितेन"** अने **"तव्वयणेणं"** जेवा शब्दो जोवामां आवे छे ज्यारे कथारत्नकोश अने पार्श्वनाथ चरित्रनी प्रशस्तिमां ए बन्नेयना पारस्परिक औचित्य भावभर्या गुणानुरागने वरसावता **"तस्सेवगेहिं"** अने **'पयपउमसेवगेहिं'** जेवा शब्दो नजरे पडे। आनुं कारण ए ज कल्पी शकाय छे के, आचार्य श्री प्रसन्नचंद्रे गुणचंद्रगणिना गुणोथी आकर्षाई तेमने आचार्यपदारूढ कर्या हशे अने ए रीते ए बन्नेय आचार्यो एकबीजामां ओतप्रोत थया हशे।

उपर जणाववामां आव्युं तेम गुणचंद्रगणि अने श्री देवभद्रसुरि ए बन्नेय एक ज व्यक्ति छे एमां लेश पण शंकाने स्थान नथी, कारण के जे श्रेष्ठिनी विज्ञप्तिने आधीन थई महावीरचरित्रनी रचना कर्यानो निर्देश कथारत्नकोश अने पार्श्वनाथचरित्रमां छे ए

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ज उल्लेख, गुरुनामनिर्देश, पट्टपरंपरा वगेरे बधुंय एकसरखुं महावीरचरित्रमां मळी आवे छे। तेमज कथारत्नकोशकार अने पार्श्वनाथ चरित्रकार पोताने संवेगरंगशाला ग्रंथना संस्कर्ता तरीके ओळखावे छे छतां ए नाम–देवभद्रसूरि नाम ए ग्रंथनी पुष्पिकामां मळता गुणचंद्रगणि ए नामनो उल्लेख मळे छे, जे महावीरचरित्रना प्रणेतानुं नाम छे। एटले कोईपण जातनी शंका विना आनो अर्थ एटलो ज थयो के, आचार्य देवचंद्र अने गुणचंद्रगणि ए बन्नेय एक ज व्यक्ति छे।

उपर "गुणचंद्रगणि अने श्री देवभद्रसूरि ए भिन्ननामधारी एक ज महापुरुष छे" ए साबित करवा माटे तेमनी जे त्रण कृतिओनो उल्लेख करवामां आव्यो छे ते उपरांत तेमणे अनेक स्तोत्रोनी तथा प्रमाणप्रकाश (?) जेवा समर्थ दार्शनिक ग्रंथनी पण रचना करी छे।

तेमनां स्तोत्रो पैकी त्रण स्तोत्रो तेमज प्रमाणप्रकाश (?) ग्रंथनो जेटलो अंश लभ्य थई शक्यो छे, ए बधांयने अहीं कथारत्नकोशने अंते प्रसिद्ध करेल छे। ए प्रसिद्ध करेल स्तोत्रो जोतां तेमज कथारत्नकोश आदिमां स्थळे स्थळे आवती दार्शनिक चर्चाओ जोतां श्री देवभद्राचार्यने समर्थ दार्शनिक आचार्यनी कोटिमां समावेश करवो जरा पण अनुचित के असंगतिभर्यो नहि ज लागे।

(क्रमशः)

(अनुसंधान पृष्ठ ३४ पर से)

मुमुक्षु खुशबुकुमारी की दीक्षामुहूर्त्त प्रदानविधि एवं शक्रस्तव अभिषेक सम्पन्न

माघ कृष्णपक्ष-१३ गुरुवार दि. ११-३-२०२१ को प्रातः ९:३० बजे श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र के प्रांगण में परमपूज्य राष्ट्रसन्त आचार्यदेव श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराजा की निश्रा में तथा पूज्य आचार्य श्री रैवतसूरिजी म. सा, गणिवर्य श्री प्रशान्तसागरजी म.सा. आदि पूज्यवरों की उपस्थिति में श्रीमती पुरीबाई पारसमलजी सुजाणी की सुपौत्री व श्रीमती रतनदेवी हीराचंदजी सुजाणी की सुपुत्री मुमुक्षु खुशबुकुमारी को दीक्षा का मुहूर्त्त प्रदान किया गया तथा दोपहर को जिनालय में मूलनायक परमात्मा के महामंगलकारी शक्रस्तव अभिषेक का विधान किया गया।

❊ ♦ ❊

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पुस्तक समीक्षा

डॉ. हेमन्त कुमार

पुस्तक नाम	:	संख्यावाचक शब्दकोष।
संकलन एवं संशोधन	:	श्री विजय जिनेन्द्रसूरिजी।
प्रकाशक	:	हर्षपुष्पामृत जैन ग्रंथमाला, लाखाबावल, शांतिपुरी, जामनगर।
आवृत्ति	:	प्रथम ।
प्रकाशन वर्ष	:	विक्रम संवत् २०४३।
भाषा	:	हिन्दी।
विशेषता	:	शास्त्रों में प्रयुक्त संख्यावाचक शब्दों का वास्तविक अंक निर्धारण।

भारतीय साहित्य जगत में विभिन्न महापुरुषों द्वारा विभिन्न विषयों एवं विधाओं पर साहित्य रचना करके इसे समृद्ध किया जाता रहा है। विश्व में कोई भी ऐसा विषय नहीं है जिस विषय में भारतीय मनीषियों ने अपनी लेखनी का उपयोग नहीं किया हो । साहित्य, दर्शन, न्याय, आयुर्वेद, ज्योतिष, गणित, नाटक, छंद, काव्य आदि विविध विषयों में भरपूर साहित्य की रचना की गई है। इसके साथ ही प्राचीन काल में जब मुद्रण की व्यवस्था नहीं थी तब से ही उन कृतियों की प्रतिलिपियाँ की जाती रही है। कृतिलेखन या प्रतिलेखन में कृतिकार तथा प्रतिलिपिकार द्वारा लेखनवर्ष या प्रतिलिपि वर्ष का उल्लेख अवश्यमेव किया जाता रहा है।

विशेषकर काव्यों में रचनावर्ष के अंकों को शब्दों में समाहित कर लेने की परम्परा रही है। ऐसे अंकों के लिए भी संख्यावाचक शब्दों का प्रयोग खूब किया गया है। इसी शृंखला में जैन साहित्य में भी संस्कृत, प्राकृत, गुजराती आदि भाषाओं के साहित्य में अंकों के लिए संख्यावाचक शब्दों का प्रयोग हुआ है।

कभी-कभी ऐसे-ऐसे संख्यावाचक शब्दों का प्रयोग किया गया है कि सामान्य दृष्टि से यह ज्ञात नहीं हो पाता है कि यह रचना संवत् ही है या कृति का अंश। बहुत पैनी दृष्टि से साहित्य का अवगाहन करने पर पता चल पाता है कि अमुक शब्द तो

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रचना संवत् हेतु प्रयोग किया गया है। उदाहरण के लिए ४ की संख्या दर्शाने हेतु दशरथपुत्र, १०० की संख्या दर्शाने हेतु धृतराष्ट्रपुत्र, १८ की संख्या दर्शाने हेतु पुराण तथा ११ की संख्या दर्शाने हेतु रुद्र, महादेव आदि शब्दों का प्रयोग किया गया है। इन सारे लोक प्रचलित संख्या वाचक नामों के अलावा खास जैन पारिभाषिक नामों का भी इसमें संग्रह है जैसे कि आचार ५, उपांग १२, कषाय ४, एवं क्रियास्थान १३ आदि।

साहित्य में प्रयुक्त संख्यावाचक शब्दों का सही-सही अर्थघटन करने हेतु विद्वानों को बहुत कठिनाईयाँ होती हैं। उन कठिनाईयों को दूर करने हेतु हर्षपुष्पामृत जैन ग्रन्थमाला की ओर से प्रकाशित एवं पूज्य आचार्य श्री विजयजिनेन्द्रसूरिजी द्वारा संकलित एवं संपादित संख्यावाचक शब्दकोष का निर्माण किया गया था। इस कोष के माध्यम से संशोधक, संपादक, विद्वान आसानी से अपेक्षित सूचनाएँ प्राप्त कर सकते हैं।

एक से लेकर सौ अंकों की संख्या तक का बहुत ही सुन्दर संकलन किया गया है। किसी-किसी शब्द के एक से अधिक अंक होते हैं, उन्हें भी दर्शाया गया है। यह प्रकाशन प्राचीन साहित्य एवं विशेष रूप से हस्तप्रतों के संशोधन-संपादन में बहुत सहायक सिद्ध हो रहा है।

इसके माध्यम से कृति का रचना वर्ष तथा हस्तप्रत के लेखन वर्ष के अंकों का निर्धारण में बहुत सरलता होती है। विद्वान इस ग्रंथ का उपयोग करके लाभान्वित हो रहे हैं और भविष्य में भी होते रहेंगे।

बरसो पूर्व प्रस्तुत प्रकाशन का संकलन संपादन करके पूज्य आचार्य श्री जिनेन्द्रसूरिजी महाराज ने विद्वानों विशेष रूप से संशोधक-संपादकों का मार्ग सरल कर दिया है। यह कार्य विद्वज्जगत के लिए बहुत ही उपयोगी सिद्ध हो रहा है। इसका मुद्रण एवं प्रकाशन बहुत स्पष्ट एवं सुन्दर है। आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर परिवार उनके इस कार्य की अनुमोदना करता है।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

समाचार सार

राष्ट्रसन्त पूज्य आचार्यदेव श्रीपद्मसागरसूरीश्वरजी महाराजा की निश्रा में बोरीजतीर्थ में ध्वजारोहण

परमपूज्य राष्ट्रसन्त आचार्यदेव श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराजा का दि. १८-२-२०२१ को प्रातःकाल मंगल वादन के साथ विश्वमैत्रीधाम, बोरीज में प्रवेश हुआ। प्रातः ९:३० बजे सत्तरभेदी जिनपूजा का आयोजन किया गया। तत्पश्चात् गुरुभगवन्तों के द्वारा वासक्षेप विधान के पश्चात् दण्ड की अष्टप्रकारी पूजा की गई। उसके बाद ढोल, वाद्य, थाली तथा डंके की नाद के साथ लाभार्थी परिवार द्वारा मस्तक पर ध्वजा लेकर जिनालय की तीन प्रदक्षिणा कर विजयमुहूर्त्त में जिनालय पर ध्वजारोहण किया गया। फिर सामूहिक गुरुवन्दना के बाद पूज्य राष्ट्रसन्तश्री ने उपस्थित श्रद्धालुओं को मांगलिक प्रदान किया। उसके बाद मुनि भगवन्तों के द्वारा सकल श्रीसंघ को बृहद् शान्ति का पाठ श्रवण कराया गया।

परमपूज्य राष्ट्रसन्तश्री ने इस प्रसंग पर उपस्थित श्रद्धालुओं को हितशिक्षा देते हुए कहा कि "महान पुण्य के योग से जिनालय निर्माण का पुण्य प्राप्त होता है। जिनालय और जिनप्रतिमा, ये पुण्य के जन्मस्थान हैं। इससे आध्यात्मिक प्रेरणा तथा समाधि की प्राप्ति होती है और यह समाधि सद्गति की ओर ले जाती है।"

ध्वजारोहण के शुभ प्रसंग पर पूज्यश्री की प्रेरणा से तीर्थ के ट्रस्टी श्री प्रकाशभाई संघवी (रत्नमणि परिवार) और तीर्थ परिसर में कसौटी जिनालय के निर्माता श्री अरविन्दभाई ताराचंदजी शाह परिवार के द्वारा द्रव्य अर्पण किया गया तथा पुंधरा निवासी ज्योत्स्नाबेन अनिलभाई शाह परिवार ने सर्वसाधारण क्षेत्र में द्रव्य अर्पण का लाभ लिया। ट्रस्टमंडल ने सभी परिवारों की हृदय से अनुमोदना की। मुख्य जिनालय के निर्माता धनलक्ष्मीबेन नवीनचंद्र जगाभाई शाह परिवार द्वारा संघपूजन तथा स्वामिवात्सल्य का सुन्दर आयोजन किया गया।

श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र में ध्वजारोहण

परमपूज्य राष्ट्रसंत आचार्यदेव श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराजा की पावन निश्रा में दि. २६-२-२०२१ को श्रीमहावीर जैन आराधना केन्द्र के परिसर में श्रीमहावीरालय का ३४वाँ ध्वजारोहण सानंद संपन्न हुआ।

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सर्वप्रथम प्रातः ९:३० बजे सत्तरभेदी पूजा का आयोजन किया गया। तत्पश्चात् ढोल, वाद्य, थाली तथा डंके की नाद के साथ लाभार्थी परिवार द्वारा मस्तक पर ध्वजा लेकर जिनालय की तीन प्रदक्षिणा कर ध्वजापूजन का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ तथा जिनालय पर ध्वजारोहण किया गया। फिर सामूहिक गुरुवन्दना के बाद पूज्य राष्ट्रसन्तश्री ने उपस्थित श्रद्धालुओं को मांगलिक प्रदान किया। पूज्य राष्ट्रसन्तश्री ने अपनी अमृतमयी वाणी में आशीर्वचन प्रदान करते हुए कहा कि परमात्मा से प्रार्थना है कि श्रीसंघ की उन्नति होती रहे, परस्पर प्रेमभाव बना रहे श्रीसंघ के द्वारा शासनसेवा के कार्य सम्पन्न होते रहे। तत्पश्चात् मुनि भगवन्तों के द्वारा सकल श्रीसंघ को बृहद् शान्ति का पाठ श्रवण कराया गया। उसके बाद रत्नमंदिर तथा गुरुमंदिर में भी ध्वजारोहण किया गया। इस अवसर पर बाहर से आए हुए अतिथि तथा संस्था के कार्यकर्त्ता गण भी उपस्थित थे।

मूलनायक भगवान की कायमी ध्वजा के लाभार्थी श्री शान्तिलालजी मिश्रीमलजी मुणोत परिवार तथा दोनों तरफ की ध्वजाओं के लाभार्थी मांगीलालजी धीसुमलजी परिवार भी इस कार्यक्रम में उपस्थित थे। गुरुमन्दिर की ध्वजा का लाभ श्रीमती बिन्दुबेन चन्द्रेशभाई मेहता तथा रत्नमन्दिर की ध्वजा का लाभ मांगीलालजी वी. शाह ने लिया था। इस प्रसंग पर श्रुतोद्धारक पू. जंबुविजयजी के प्रशिष्य पूज्य आचार्य श्री पुंडरीकरत्नसूरिजी महाराज साहब आदि ठाणा भी उपस्थित थे।

राष्ट्रसन्त पूज्य आचार्यदेव श्रीपद्मसागरसूरीश्वरजी महाराजा की पावन निश्रा में जैन डॉक्टर्स फेडरेशन, अहमदाबाद चेप्टर का विशेष कार्यक्रम

दि. २२-२-२०२१ को अहमदाबाद के सी.जी रोड पर अवस्थित डॉ. अनिल जैन के फॉर्म हाउस में परमपूज्य राष्ट्रसन्तश्री की निश्रा में जैन डॉक्टर फेडरेशन अहमदाबाद के द्वारा किए जा रहे कार्यों की अनुमोदना हेतु तथा आगामी कार्यक्रमों की योजना हेतु डॉक्टरों की एक सभा का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में सर्वप्रथम गणिवर्य श्री प्रशांतसागरजी महाराज साहेब ने जैन डॉक्टरों की सेवा की अंतर से अनुमोदना की।

परमपूज्य राष्ट्रसन्तश्री ने अपने प्रवचन में सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि “भगवान महावीरस्वामी ने कहा है कि दीन-दुःखियों तथा बीमारों की सेवा ही मेरी सेवा है। आप सभी के द्वारा किया जा रहा वैयावच्च का यह कार्य वास्तव में

For Private and Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अनुमोदनीय है। सेवा में निःस्वार्थ भावना से आत्मगुणों की वृद्धि होती है। आहार की शुद्धि से विचार शुद्ध होता है। राष्ट्रसन्त पूज्यश्री ने विशेष रूप से बताया कि एक दीपक से हजारों दीपक प्रज्वलित किए जा सकते हैं। संगठन को और अधिक मजबूत करें, एक दूसरे के प्रति प्रेम का सम्पादन करें। शासनसेवा में आप सभी का सहयोग मिलता रहे, यही आशा करता हूँ।"

प्रवचन के पश्चात् पूज्यश्री ने डॉक्टर अनिल जैन को विशेष रूप से आशीर्वाद प्रदान करते हुए कहा कि आपके हाथों से सेवा के और भी कार्य होते रहें। वहाँ उपस्थित मेहमानों के द्वारा भी डॉक्टर अनिल जैन के कार्यों की अनुमोदना की गई।

कार्यक्रम की समाप्ति पर श्रीकान्ताबहन दिलीपजी तथा अनिलजी जैन आदि समस्त परिवार ने पूज्यश्री को चारित्र के उपकरण व कांबली अर्पण किया। जैन डॉक्टर्स फेडरेशन अहमदाबाद के पदाधिकारियों के द्वारा भी पूज्यश्री को कृतज्ञतापूर्वक कांबली अर्पण की गई।

पूज्यश्री की वाणी का श्रवण कर उपस्थित सभी डॉक्टर प्रभावित हुए, उन्हें जैनधर्म के वैज्ञानिक रहस्यों को जानने और समझने का अवसर मिला। पूज्यश्री के आगमन से प्राकृतिक सौन्दर्य के बीच आध्यात्मिक वातावरण का निर्माण हो गया था। इस आयोजन में डॉ. प्रज्ञेश का सुन्दर योगदान रहा।

इस अवसर पर शासनरत्न श्री गणपतजी चौधरी भी विशेष रूप से उपस्थित थे। कार्यक्रम के अन्त में बागरेचा जैन परिवार द्वारा उपस्थित अतिथियों की साधर्मिक भक्ति की गई।

आचार्य श्रीपुंडरीकरत्नसूरिजी महाराज साहब ज्ञानमंदिर, कोबा पधारे

दि. २७-०२-२०२१ को श्रुतसमर्पित समर्थ महापुरुष, जैनधर्म के प्रखर विद्वान श्रीजंबुविजयजी महाराज साहब के प्रशिष्य और जैसलमेर आदि ज्ञानभंडारों में अपना उल्लेखनीय योगदान देने वाले पू. आचार्य श्री पुंडरीकरत्नसूरिजी महाराज साहब ने आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर कोबा की मुलाकात हेतु पधारे। उपलब्ध समृद्ध साहित्य, साहित्य का संरक्षण, सम्राट् संप्रति संग्रहालय एवं विशेष रूप से जीर्ण-शीर्ण हो रही साहित्य सम्पदा को आधुनिक तकनीक की मदद से की जा रही संरक्षण प्रक्रिया तथा लैब आदि देखकर वे अत्यन्त प्रभावित हुए। और यहाँ के कार्यों की अनुमोदना की।

For Private and Personal Use Only

राष्ट्रसन्त पूज्य आचार्यदेव श्री पद्मसागरसूरीश्वरजी महाराजा की पावन निश्रा में आयोजित जैन डॉक्टर फैडरेशन की सामूहिक बैठक

For Private and Personal Use Only

Registered Under RNI Registration No. GUJMUL/2014/66126 SHRUTSAGAR (MONTHLY).
Published on 15th of every month and Permitted to Post at Gift City SO, and on 20th date of every month under Postal Regd. No. G-GNR-334 issued by SSP GNR valid up to 31/12/2021.

श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र की
३४वीं वर्षगांठ के सुअवसर पर आयोजित ध्वजारोहण

BOOK-POST / PRINTED MATTER

प्रकाशक
श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र
आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर, कोबा
जि. गांधीनगर ३८२४२६
फोन नं. (०७९) २३२७६२०४, २०५, २५२
फेक्स (०७९) २३२७६२४९
Website : www.kobatirth.org
email : gyanmandir@kobatirth.org

Printed and Published by : HIREN KISHORBHAI DOSHI, on behalf of SHRI MAHAVIR JAIN ARADHANA KENDRA, New Koba, Ta.&Dist. Gandhinagar, Pin-382426, Gujarat. And **Printed at :** NAVPRABHAT PRINTING PRESS, 9, Punaji Industrial Estate, Dhobighat, Dudheshwar, Ahmedabad-380004 and **Published at :** SHRI MAHAVIR JAIN ARADHANA KENDRA, New Koba, Ta.& Dist. Gandhinagar, Pin-382426, Gujarat. **Editor :** HIREN KISHORBHAI DOSHI